बहुत से लोग यह नहीं जानते कि हर व्यक्ति के भीतर एक अंतरात्मा होती है। यही अंदर की नैतिक आवाज़ हमें बताती है कि हमारा आचरण सही है या गलत। भले ही सारी दुनिया हमारे कार्यों की प्रशंसा करे, लेकिन यदि वे परमेश्वर के नैतिक मापदंडों के विरुद्ध हैं, तो हमारी अंतरात्मा हमें हमारी गलती का एहसास दिलाएगी। इसके विपरीत, जब हम सही कार्य करते हैं, तो यही अंदर की गवाही हमें आश्वस्त करती है, चाहे लोग इसे स्वीकार करें या नहीं।

बाइबल के अनुसार, अंतरात्मा परमेश्वर के द्वारा दी गई एक आंतरिक मार्गदर्शक है। यह हमारे भीतर परमेश्वर के स्वरूप
को दर्शाती है।
(उत्पत्ति 1:27)
“परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में उत्पन्न किया; अपने ही स्वरूप में उत्पन्न कर के उसको नर और नारी कर के उत्पन्न किया।”

यह हमारे आत्मिक जीवन की दशा का मापदंड है। जब हम परमेश्वर की इच्छा से भटकते हैं, तो हमारी अंतरात्मा खिन्न हो जाती है और हमें शांति नहीं देती, जब तक कि हम पश्चाताप करके परमेश्वर से मेल न कर लें।

कल्पना कीजिए, कोई किसी रिश्तेदार का अपमान करे, चोरी करे, गुप्त रूप से व्यभिचार करे, चुगली करे या जान-बूझकर किसी को नुकसान पहुँचाए। इन सभी बातों में उसकी अंतरात्मा तुरन्त उसे दोषी ठहराती है। यह दोष केवल कोई भावनात्मक अनुभूति
नहीं, बल्कि यह पवित्र आत्मा की प्रेरणा से होता है, जो हमें पश्चाताप और नवीनीकरण की ओर ले जाता है।
(रोमियों 8:16)
“आत्मा आप ही हमारी आत्मा से गवाही देता है कि हम परमेश्वर
के सन्तान हैं।”

अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर केवल हमारे कर्मों के लिए ही नहीं, बल्कि हमारे मन और अंतरात्मा की स्थिति के लिए भी हमें उत्तरदायी ठहराएगा। प्रेरित पौलुस ने चेतावनी दी:

1 तीमुथियुस 4:1-2
“पर आत्मा स्पष्ट कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग विश्वास से भटक कर, धोखा देनेवाले आत्माओं और दुष्टात्माओं
की शिक्षाओं की ओर मन लगाएंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के द्वारा होगा जिनके मन की अंतरात्मा जलते हुए लोहे से दाग दी गई है।”

यह वचन बताता है कि यदि हम निरंतर पाप में बने रहें, तो हमारी

अंतरात्मा कठोर हो जाती है और फिर पश्चाताप और परिवर्तन के लिए कोई स्थान नहीं बचता।

इसके बावजूद, बहुत लोग क्षमा माँगने में विलम्ब करते हैं। कभी हम अपने आचरण को सही ठहराने की कोशिश करते हैं, या फिर और उपाय ढूँढते हैं ताकि अपराध-बोध से छुटकारा मिले। लेकिन ऐसा करने से हम परमेश्वर से और दूर हो जाते हैं। बाइबल के अनुसार क्षमा एक टूटी हुई संबंध की पुनर्स्थापना है — और यही विषय सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में देखा जाता है। प्रभु यीशु का सम्पूर्ण सेवकाई जीवन क्षमा से जुड़ा हुआ था, और उन्होंने अपने शिष्यों को भी यही करने की आज्ञा दी।

एक बार मैंने राजनीति के क्षेत्र में विनम्रता का बड़ा अच्छा उदाहरण देखा। कुछ सांसदों और मंत्रियों ने सार्वजनिक रूप से राष्ट्रपति के विरोध में बातें कही थीं और उनके कथन सब जगह फैल चुके थे। परन्तु जब उन्हें अपने किए की गंभीरता का एहसास हुआ, तो उनमें से कुछ स्वेच्छा से राष्ट्रपति से क्षमा माँगने चले गए। एक मंत्री ने कहा कि उसके अपराध का बोझ इतना भारी था कि वह रातों को सो भी नहीं पाता था, जब तक कि उसने क्षमा प्राप्त नहीं कर ली। इस विनम्रता ने न केवल उसके हृदय को शांति दी, बल्कि यह एक जीवित उदाहरण बन गया कि पश्चाताप क्या होता है।

इस कहानी के मूल में वही बाइबल का सत्य छिपा है: सच्चा पश्चाताप

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

ही सच्ची स्वतंत्रता देता है। जब हमारे कार्य परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध होते हैं, तो पवित्र आत्मा से प्रेरित अंतरात्मा हमें पाप स्वीकार करने और सुधारने को प्रेरित करती है। हमें अपने अहंकार या बहानों में नहीं टिके रहना चाहिए, बल्कि परमेश्वर, अपने परिवार और अन्य लोगों के सामने विनम्र हो जाना चाहिए। चाहे आपने माता-पिता, मित्र, जीवनसाथी, सहकर्मी या स्वयं परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया हो, क्षमा माँगने में देर मत कीजिए।

क्षमा माँगने का पहला और सबसे बड़ा लाभ है वह शांति और स्वतंत्रता, जो इसके साथ आती है। यद्यपि हमारे भीतर की आवाज़ कह सकती है, “वे तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेंगे” या “लोग तुम्हें कमजोर समझेंगे,” परन्तु पवित्रशास्त्र यह सिखाता है कि नम्रता और सच्चे मन से किया गया पश्चाताप अनुग्रह को प्राप्त करता है। वास्तव में कोई भी उस व्यक्ति से घृणा नहीं करता जो अपनी गलती को सच्चे मन से स्वीकार करता है। इसके विपरीत, ऐसा करने से सम्मान और प्रेम और गहरा हो जाता है।

क्षमा केवल आपसी संबंधों का विषय नहीं है; यह हमारे और परमेश्वर के रिश्ते की भी नींव है। प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया:

मत्ती 6:9-13
“इसलिये तुम्हें ऐसे प्रार्थना करनी चाहिए —
हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी हो।
हमारी दिन-भर की रोटी आज हमें दे।
और जैसे हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू
भी हमारे अपराध क्षमा कर।
और हमें परीक्षा में मत डाल, परन्तु हमें बुराई से बचा।”

इस प्रार्थना के भीतर क्षमा माँगने का स्थान केन्द्र में है। यह हमें स्मरण दिलाता है कि जैसे हम परमेश्वर से अनुग्रह पाते हैं, वैसे हमें दूसरों के साथ भी वही अनुग्रह दिखाना चाहिए। और पवित्रशास्त्र कहता है:

1 यूहन्ना 1:9
“यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह, जो सच्चा और धर्मी है, हमारे पाप क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में सच्चा है।”

संक्षेप में, सम्पूर्ण बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर की दी

हुई और पवित्र आत्मा द्वारा संचालित हमारी अंतरात्मा ही भीतर से पाप और धर्म की गवाही देती है। वही हमें नम्रता, पश्चाताप और अन्ततः क्षमा के द्वारा मिली स्वतंत्रता की ओर ले जाती है। जिनसे भी तुमने पाप किया हो, उनसे और स्वयं परमेश्वर से, क्षमा माँगने से मत डरो। यही सच्ची शांति और बहाली का मार्ग है।

आप परमेश्वर में आशीषित रहें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp